ब्रिटिश राज में भारत का आर्थिक शोषण : एक अध्ययन

संजय चौधरी
हिंदी अधिकारी व संपादक, 'सड़क दर्पण'
सीएसआईआर-केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान
दिल्ली-मथुरा मार्ग, नई दिल्ली
ईमेल - sanjayc1965@gmail.com

सारांश

भारत कभी विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था था। यह एक प्रमाणित तथ्य है कि धन धान्य से परिपूर्ण इस देश को लूटने के लिए सदियों से लुटेरे यहाँ आते रहे हैं। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं कि अंग्रेज अब तक के सबसे बड़े लुटेरे सिद्ध हुए हैं। जहां अंग्रेजों से पहले के सभी आक्रमणकारी भारत को लूट कर अपने देश लौट जाते थे, वहीं पर अंग्रेजों ने समय बीतने के साथ क्रमश: भारत में अपना शासन स्थापित कर लिया। परिणाम यह हुआ कि विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था को सोची समझी रणनीति के तहत क्रमबद्ध तरीके से लूटा गया। यहां तक कि पराधीन भारत एक गरीब और कमजोर देश बन कर रह गया। अंग्रेजी शासन में प्रशासन की बर्बरता, भारी कराधान, भारतीयों के साथ भेदभावपूर्ण व निकृष्ट व्यवहार और लोगों की गरीबी ने पत्रकारों, कवियों और साहित्यकारों के मन में आक्रोश को जन्म दिया। इस आक्रोश की सशक्त अभिव्यक्ति हम तत्कालीन साहित्य में पाते हैं। हिंदी के विविध साहित्य में अंग्रेज़ों के आर्थिक शोषण की इस नीति का विरोध किया गया है। पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों, प्रभात फेरी, जनसभाओं आदि विभिन्न माध्यमों से हर प्रकार के शोषण का विरोध तेज होता गया। विरोध के इस क्रम को जारी रखते हुए स्वदेशी और स्वराज के लिए जनमानस को जागृत करने का अभियान चलाया गया। प्रस्तुत आलेख में अंग्रेज़ों की आर्थिक नीति के परिणामस्वरुप उत्पन्न परिस्थितियों और भारत के स्वाधीनता संग्राम में इसके योगदान का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द

अंग्रेजी लूट, गरीबी, भुखमरी, हिंदी पत्रकारिता, प्रतिबंधित साहित्य, 'हँसमुख' गद्य, जनजागरण, स्वाधीनता संग्राम

प्रस्तावना

अंग्रेज शासकों ने पराधीन भारत में शासन के बहाने बेरोक-टोक पूरे देश में लूट और अत्याचार को अंजाम दिया। उनके इस कृत्य का परिणाम यह हुआ कि भारत में अंग्रेज़ों का शासनकाल खत्म होते-होते भारतवासियों की दरिद्रता और विपन्नता सारे संसार में एक कहावत-सी बना दी गई। कभी वैभव और संपन्नता के लिए जाना जाने वाला देश अब अभाव और भुखमरी का पर्याय बन गया। यहां तक कि भारत के बारे में यह विश्वास करना भी मुश्किल हो गया कि केवल एक सहस्त्र वर्ष पहले यह संसार का सबसे धनी देश था। वास्तव में, अंग्रेज शासकों ने पूरे देश में आर्थिक शोषण और अत्याचार का आतंक फैलाने के क्रम में कृषि एवं स्वदेशी उद्योग-धंधों को पूरी तरह से तबाह कर दिया था।

बीसवीं सदी के आरंभ में स्थिति यह हो गई कि भारत में प्राय: प्रत्येक औद्योगिक वस्तु विदेशों से आने लगी और उसके बदले में भारत से सोना, चांदी और कच्चा माल इंग्लैंड जाने लगा। भारत की संपदा को लूटने और लोगों की संपत्ति हड़पने के लिए अंग्रेज़ों ने कई काले कानून बनाए। इस प्रकार ब्रिटिश राज में लूटतंत्र एवं अराजकता का अघोषित राज्य स्थापित हो गया। इस लूटतंत्र का विशद वर्णन इतिहास की किताबों के अलावा तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं तथा हिंदी साहित्य और विशेष रुप से हिंदी के प्रतिबंधित साहित्य में मिलता है।

विविध साहित्य में भारतीयों के आर्थिक शोषण की अभिव्यक्ति

भारत पर शासन करने की आड़ में जब अंग्रेज यहां की संपदा और संसाधनों को हथियाने के लिए अपना लूटतंत्र विकसित कर रहे थे, तब पत्र-पत्रिकाओं आदि विभिन्न माध्यमों से जनमानस को जागृत करने का कार्य किया गया। 1857 से पहले भारतीय असंतोष की एक झलक कलकत्ते से छपे हिंदी पत्र 'समाचार सुधावर्षण' (18 मई 1855) में मिलती है, 'ब्रिटिश गवर्नमेंट ने भारतवर्ष निवासी राजों पर अन्याय-अत्याचार ओ जोरावरी करने को जो आरंभ किया है, सो अब उसका हद हो चुका। काहे से कि धन, गहना ओ कपड़ा लूट के, फेर बैठने का झोपड़ा भी छीनने का अब इरादा किया, इससे अधिक जोरावरी क्या करनी होती है?' हिंदी पत्रकारिता में अंग्रेजी राज का यह पहला स्पष्ट विरोध है, जो 1857 से पहले व्यक्त हुआ।[1] (हिंदी नवजागरण : भारतेन्दु और उनके बाद, पृष्ठ 17)

इस युग के लेखकों ने अपनी रचनात्मकता में खास तरह की व्यंग्य की धार का सृजन किया जिसे 'हँसमुख गद्य' के रुप में पहचान मिली। अंग्रेजी राज में किये जा रहे शोषण तथा सरकार की साम्राज्यवादी नीतियों पर व्यंग्य करते हुए 'भारतेंदु' लिखते हैं-

"चुंगी और पुलिस तुम्हारी दोनों भुजा हैं, अमेल तुम्हारे नख हैं, अंधेर तुम्हारा पृष्ठ है और आमदनी तुम्हारा हृदय है, अतएव हे अंगरेज, हम तुम्हें प्रणाम करते हैं। खजाना तुम्हारा पेट है, लालच तुम्हारी क्षुधा है, सेना तुम्हारा चरण है, ख़िताब तुम्हारा प्रसाद है, अतएव हे विराटरूप अंगरेज, हम तुमको प्रणाम करते हैं।"[2] (भारतेन्दुकालीन व्यंग्य परम्परा, संपा. ब्रजेंद्रनाथ पांडेय, पृष्ठ 44)

इतना ही नहीं, 'भारतेंदु' ने अपनी पत्रिका 'कविवचन सुधा' के विभिन्न अंकों में अंग्रेजों के शोषण तंत्र का लगातार विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। उन्होंने लिखा था, "जब अंग्रेज विलायत से आते हैं प्रायः कैसे दरिद्र होते हैं और जब हिंदुस्तान से अपने विलायत को जाते हैं तब कुबेर बनकर जाते हैं। इससे सिद्ध हुआ कि रोग और दुष्काल इन दोनों के मुख्य कारण अंग्रेज ही हैं।" 'भारतेन्दु' अच्छी तरह समझ चुके थे कि 'अंग्रेजी शासन भारतीयों के लाभ के लिए है' यह पूर्णतः खोखला दावा था और एक दुष्प्रचार था। भारतेन्दु के अनुसार अंग्रेजों की "लूट" ने भारत की आर्थिक दुर्दशा एवं गरीबी को जन्म दिया था–

"कल के कल बल छलन सों छले इते के लोग,
नित नित धन सों घटत है बढत है दुख सोग।।"[3] ('राष्ट्रवाद और संस्कृति : राष्ट्रवादी साहित्य', ई-ज्ञानकोष)

अँग्रेज किस तरह भारत की संपदा लूट रहे थे, इसका संकेत 'भारतेन्दु' ने अपनी टिप्पणी देते हुए 'कविवचन सुधा' के 7 मार्च, 1874 के अंक में लिखा था, "सरकारी पक्ष का कहना है कि हिंदुस्तान में पहले सब लोग लड़ते-भिड़ते थे और आपस में गमनागमन न हो सकता था। यह सब सरकार की कृपा से हुआ। हिंदुस्तानियों का कहना है कि उद्योग और व्यापार बाकी नहीं। रेल आदि से भी द्रव्य के बढ़ने की आशा नहीं है। रेलवे कंपनी वाले जो द्रव्य व्यय किया है, उसका व्याज सरकार को देना पड़ता है और उसे लेने वाले बहुधा विलायत के लोग हैं। कुल मिलाकर 26 करोड़ रुपया बाहर जाता है।"4 (https://hi.wikipedia.org/wiki/भारतेन्दु_हरिशचन्द्र)

अंग्रेज शासकों की कुटिलता को 'भारतेन्दु' ने गद्य और पद्य अर्थात साहित्य रचना की दोनों विधाओं में व्यक्त किया है। अपनी सुविख्यात कविता 'भारत-दुर्दशा में उन्होंने लिखा था, "अंगरेजी राज सुख साज सजे अति भारी, पर सब धन विदेश चलि जात ये ख्वारी।"5 (रामजी यादव, भारतेंदु संचयन, पृष्ठ 238) अंग्रेजों के शासन में जिस प्रकार से राष्ट्रीय

संपदा और देशी श्रम शक्ति का शोषण किया जा रहा था और आम जनता का उत्पीड़न हो रहा था, भारतेन्दु उसे रेखांकित करते हैं-"रोवहु सब मिलि आवहु भारत भाई। हा हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई।"6 (भारतेंदु संचयन, पृष्ठ 237)

भारतेन्दु ने 'लेवी प्राणलेवी' नामक अपने लेख में भारतीय धन के विदेश जाने की व्यथा व्यक्त की है। ब्रिटिश साम्राज्यवादी लूट के विरुद्ध कुछ ऐसा ही भाव भारतेन्दु युग के पंडित बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन' के काव्य में भी देखने को मिलता है - "पै दुख अति भारी इक यह जो बढ़त दीनता। भारत मैं संपत्ति की दिन दिन होत छीनता॥ महंगी बढ़तिहि जात, घटत है अन्न भाव नित। जातें कौऊ सुख सामग्री नहिं सुहात चित्त॥ बढ़त प्रजा नित यहाँ, घटत पै उद्यम सारे। बिन उद्यम धन मिलै न, बिन धन मनुज बेचारे॥"7 (प्रेमघन रचनावली, भाग-2, पृ. 251)

जनमानस जब अंग्रेज सरकार के विरुद्ध होने लगा तो सरकार की ओर से विरोध एवं आलोचना के हर स्वर को दबाने का प्रयास शुरु हुआ। एक के बाद एक कई पत्र, पत्रिकाओं एवं पुस्तकों को प्रतिबंधित कर दिया गया। प्रतिबंधित साहित्य के अंतर्गत विपुल मात्रा में ऐसी सामग्री है जो ब्रिटिश सरकार द्वारा अपनाई गई शोषण की नीति के विरोध में लिखी गई थी। विशेष बात है कि अंग्रेजों के लूटतंत्र से त्रस्त आम भारतीयों ने ही अधिकतर इस साहित्य की रचना की है। जिस भी संकलन या प्रकाशन को अंग्रेजों ने घबराकर प्रतिबंधित किया था, उसमें शामिल सभी रचनाएं जनता में व्याप्त असंतोष एवं उनके आक्रोश की प्रभावपूर्ण प्रस्तुति करती हैं।

'सोने की चिड़िया' कहलाने वाले देश में आकर लुटेरे अंग्रेजों ने जो शोषण का शासन स्थापित किया था, उसकी तीखी प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक था। तत्कालीन कविताएं "भारतीयों के लाभ' और 'भारत में शांति के लिए' अंग्रेजी शासन की स्थापना" के दावे की धज्जियां उड़ाती हैं। इसी संदर्भ में "हमारी दशा" नामक कविता में 'संसार के सिरमौर' भारत की स्थिति दर्शाई गई है -

"क्या कहूं मैं हाल अब इस देश का जो हो गया,
संसार का सिरमौर था, है भाग्य उसका सो गया।
आमद लुटेरों की हुई और दुख बीज का बो गया
हम दिन दुर्बल हो गए हैं सुख सारा खो गया।
मर रहे हैं अन्न बिन फिर भी दमन भारत में है
अमन वालों बता दो क्या अमन भारत में है॥"8 ('स्वतंत्र स्वर', अमृत महोत्सव. एनआईसी.इन, पृष्ठ 14)

हिंदी के विभिन्न कवियों ने समाज की दुखद स्थिति का चित्रण करते हुए अंग्रेजों के भेदभावपूर्ण व्यवहार और शोषणपरक अत्याचार की भर्त्सना की है। लेकिन इसके साथ-साथ कवियों की वाणी में 'पाप का घड़ा भर जाने' एवं 'निर्दयी पापी का अंत होने' की चेतावनी भी गूंजती है। जयनारायण व्यास ने अपनी प्रतिबंधित कविता "याद रहेगी!" में जालिम अंग्रेजों को कुछ इस प्रकार चेताया है –

"भूखे की सूखी हड्डी से, वज्र बनेगा महा भयंकर।
ऋषि दधीचि को ईर्ष्या होगी, नेत्र नया खोलेंगे शंकर॥
अन्न विहीन उदर की आहें, दावानल-सी बनकर भीषण।
भस्मीभूत कर देंगी उनको, जो दीनों का करते शोषण॥
अन्न नहीं है, वस्त्र नहीं है, शक्ति नहीं है और न वाणी।
साहस-हिम्मत तनिक नहीं है, निर्बल हूं, हूं पामर प्राणी॥

पर है हृदय अधमुए तन में, और जलन है भीतर भारी।
वह सुलगेगी, वह फैलेगी, जल जावेगी दुनिया सारी।
नव प्रकाश तब जाग उठेना, चामुंडा पकड़ेगी खप्पर।
देख-देख लपटों की झपटें, तांडव नृत्य करेंगे शंकर॥
.....
नहीं रहेगी सत्ता तेरी, बस्ती तो आबाद रहेगी।
जालिम! तेरे सब जुल्मों की, उसमें कायम याद रहेगी!!" 9 (जयनारायण व्यास, समाचार पत्र 'प्रजासेवक', दिनांक 20 अगस्त 1941 ई० से संकलित, पृष्ठ 9)

प्रतिबंधित साहित्य के अंतर्गत आज जो भी सामग्री प्रकाश में आ रही है, उनमें ब्रिटिश सरकार के काले कारनामों का बेबाक चित्रण किया गया है। इस साहित्य में परजीवी शासकों के अन्यायपूर्ण शासन के साथ साथ जिस भाव को प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है, वह है आम भारतीय की आजाद होने की आकांक्षा। इसमें गांधी के अहिंसापूर्ण आंदोलन का समर्थन भी है। उदाहरण के लिए 'जालिम सता रहे हैं' कविता को देखा जा सकता है –

"हमारे खूं से बने हैं गोरे हमीं को काला बता रहे है।
हमीं से पैसा वसूल करके हमीं को जालिम सता रहे हैं॥
यहां पै आके किया तिजारत जमाया हिन्दोस्ताँ पै सिक्का।
तबाह कर दीन दुखिया भारत ये अपना शासन जमा रहे हैं॥
ये दीन भारत के भूखे बच्चे हैं भूखे मरते रुदन मचाते।
औ देखो लंदन के हैं बाशिन्दे जो चाय विस्कुट उड़ा रहे हैं॥
गुलामी से देख हिन्द जकड़ा बजाया मोहन ने शंख आला।
जो लाल भारत के सो रहे थे उन्हें तो गांधी जगा रहे हैं॥
जो तुम चलाओगे गन मशीनें तो हम भी सीना अड़ाय देंगे।
भगायेंगे हम तुम्हें भी लंदन ये सत्य बानी सुना रहे हैं॥
बनायेंगे हम अनेकों जगी अनोखा ये जंग मचा मचा कर।
निशस्त्र होकर भी 'भीम' ऐसी ये गर्जना हम सुना रहे हैं॥"10 ('स्वतंत्र स्वर', अमृत महोत्सव.एनआईसी.इन, राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय, पृष्ठ 8)

ब्रिटिश राज में जिस गति से अत्याचार बढ़ा उसी गति से विरोध का दायरा बढ़ता गया। सड़कों और नुक्कड़ों पर सभाएं होने लगीं, नज़्म और गजलें पढ़ी जाने लगीं अर्थात जनता को आजादी की मुहिम से जोड़ने की कवायद तेज होती चली गई। गली गली में गूंजते गीतों ने विरोध के कारवां को आगे बढ़ाया और प्रतिबंधित होने पर भी लोगों को विद्रोह के लिए प्रेरित करते रहे –

"उठ। उठ! भारतवर्ष अरे। अब तो तू आंखें खोल।
मत तन्द्रा में पड़कर अपना जीवन खो अनमोल॥
कब तक तू अन्याय सहेगा, रह कर निर्धन मौन।
जरा सोच रे! नहीं प्राप्त है, तुझको साधन कौन॥"11
(मित्तल, समाचार पत्र 'प्रजासेवक', दिनांक 28 मई 1941 से संकलित, पृष्ठ 10)

स्वाधीनता आंदोलन की चिंगारी को जन सामान्य तक पहुंचाने के लिए कलम के विभिन्न ज्ञात एवं अज्ञात सेनानियों ने स्वरचित गीतों को 'प्रभाती', 'चरखा गीत', 'राष्ट्रीय वन्दना', 'आल्हा', 'स्वराज्य गीत', 'स्वराज गायन', 'खादी का डंका', 'देशभक्त की आरजू', प्रार्थना, उद्बोधन, 'रणभेरी', 'शहीदों का संदेश' जैसे नाम दिये। गीतों के माध्यम से राष्ट्र को स्वतंत्र कराने की प्रेरणा दी गई। उदाहरण के लिए यतन लाल यति द्वारा प्रकाशित 'राष्ट्रीय शंखनाद' संग्रह के 'माता की पुकार' गीत को लिया जा सकता है। इसमें विदेशी के बायकाट और आजादी की बलिवेदी पर जान निछावर करने के लिए प्रेरित किया गया है –

"ऐ हिन्द के सपूतो! कुछ भी तो कर दिखाओ।
अब भी तजो गुलामी सबको यही सिखाओ।।
आजाद जो है होना पहला सबक यही है।
कानून को कुचलकर घर जेल को बनाओ।।
जो जुल्म कर रहे हैं होकर तुम्हारे भाई।
पिस्तौल देशी उन पर बायकाट की चलाओ।
कट जाय सर, न कर दो, यह आखिरी कसौटी।
इसका भी वक्त आया वीरो! कदम बढ़ाओ।।"12 ('स्वतंत्र स्वर', अमृत महोत्सव.एनआईसी.इन, पृष्ठ 19)

आजादी के अभियान में हिंदी पत्रकारों के योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', बालकृष्ण भट्ट, प्रताप नारायण मिश्र, गणेश शंकर विद्यार्थी, बाबूराव विष्णु पराड़कर आदि ने समाचार पत्रों से जुड़ कर निरंकुश अंग्रेजी साम्राज्य के अत्याचार को प्रस्तुत किया। भारत को दरिद्र बनाने की सरकारी नीति के विरोध में लोगों को एकजुट करने के लिए बाबूराव विष्णु पराड़कर ने 29 अक्तूबर 1930 से 8 मार्च 1931 तक अपने पत्र के संपादकीय स्थल पर मात्र एक वाक्य रखा -"देश की दरिद्रता, विदेश जानेवाली लक्ष्मी, सिर पर बरसानेवाली लाठियाँ, देशभक्तों से भरनेवाले कारागार इन सबको देखकर प्रत्येक देशभक्त के हृदय में जो अहिंसामूलक विचार उत्पन्न हों, वही संपादकीय विचार है।"13 (भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में पत्र-पत्रकारों का योगदान, पृष्ठ 85)

स्वाधीनता आंदोलन के इस दौर में अधिकांश पत्रकार एवं साहित्यकार अपनी लेखनी का प्रयोग भारतीयों की सोई हुई शक्ति को जगाने के लिए कर रहे थे ताकि अंग्रेजों की लूट-खसोट और अनीतिपूर्ण शासन व्यवस्था से देश को मुक्त कराया जा सके। बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने न केवल स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया था, वरन जेल यात्रा में ही उन्होंने अपने अधिकांश साहित्य की रचना की। अन्याय का दमन करने और न्याय का पक्ष लेने में नवीन जी सदा दृढ़ और आग्रही बने रहे। 'विप्लव गान' की अमर पंक्तियों के माध्यम से कवि 'नवीन' क्रांति की *तान सुनाते हैं* - 'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ, जिससे उथल-पुथल मच जाये। एक हिलोर इधर से आये, एक हिलोर उधर को जाये।"।।"14 (स्वतंत्रता पुकारती, संपादक : नंद किशोर नवल, पृष्ठ 180)

मैथिलीशरण गुप्त ने विदेशी हुकूमत के खिलाफ खुलकर लिखा है। लेकिन इसके साथ-साथ वे अपने प्राचीन गौरव के प्रति लोगों को बार-बार जागरुक करते हैं। गौरवशाली प्राचीन सभ्यता की याद दिलाते हुए वे देशवासियों को संबोधित करते हैं, "तुम हो सबसे पहले सभ्य, जिन्हें न कुछ भी रहा 'अलभ्य'।"15 (मैथिलीशरण गुप्त ग्रंथावली, पृ.169) इसी क्रम में, वे देश की विपन्नता और अभावग्रस्त एवं कष्टपूर्ण जीवन की पृष्ठभूमि में कर्त्तव्य पथ पर दृढ़तापूर्वक चलने की प्रेरणा देते हैं। अपना अधिकार पाने के लिए धैर्य के साथ निरंतर प्रयास करना और कर्मरत रहना ही सच्चा धर्म है- "दु:ख, शोक, जब जो आ पड़े, सो सब सहो,/ होगी सफलता क्यों नहीं कर्त्तव्य पथ पर दृढ़ रहो।।/अधिकार खो कर बैठ रहना,

यह महा दुष्कर्म है;/न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है।"16 (https://hi.wikibooks.org/wiki/राष्ट्रकवि_मैथिलीशरण_गुप्त)

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की राष्ट्रीय चेतना के विकास की पराकाष्ठा भारत छोड़ो आन्दोलन (1942) के आस-पास दिखाई देती है। दीन-हीन प्रजा पर अत्याचार करने वाली जुल्मी अंग्रेजी व्यवस्था के विरूद्ध निराला खुल कर अपनी आवाज उठाते हैं। देश को लूट कर खोखला करने के जिम्मेदार गोरों को चोर कहकर वे देशवासियों को अंग्रेजों की चाटुकारिता करने से मना करते हैं। निराला की निम्नलिखित पंक्तियों में फटकार भी है और जालिम सत्ता के विरुद्ध बल-प्रदर्शन करने की ललकार भी है –

"चूम चरण मत चोरों के तू/गले लिपट मत गोरों के तू
अगर उतरना पार चाहता/दिखा शक्ति बलवान।"।।"17 (निराला और दिनकर की काव्य चेतना, पृ.99)

भारत का धन लूटकर अंग्रेजों ने दुनिया में अपना साम्राज्य स्थापित किया था और निरंतर शक्तिशाली हो रहे थे। देश में जब अंग्रेजों का अंधाधुंध बल-प्रयोग, दमन और काले-पानी का कुचक्र चल रहा था, तब सन 1920 के बाद स्वाधीनता आंदोलन को महात्मा गांधी ने सत्याग्रह का नया मंत्र दिया। भारत माता को स्वतंत्र करने जा रहे धीर वीर और मस्ताने सत्याग्रहियों की सेना का सशक्त चित्रण करते हुए सोहनलाल द्विवेदी 'सत्याग्रह' कविता में कहते हैं– "आज चली है सेना फिर से/धीर वीर मस्तानों की/आजादी के दीपक पर है/भीड़ लगी परवानों की। सत्याग्रही बने वह जिसका/देश प्रेम से नाता हो/अपने प्राणों से भी प्यारी/जिसको भारत माता हो"।।"18 (हिंदी साहित्य विविध प्रसंग, मत्स्येंद्र शुक्ल, पृ. 115)

देश को आजाद करने की जो उत्कट भावना हम सत्याग्रहियों की सेना में मौजूद पाते हैं,वही जोश क्रांतिकारियों की फौज में भी नजर आता है। क्रांतिकारी जानते थे कि अंग्रेजी शासक 'सभ्य' होने का दंभ पालने वाले पाखंडी और निर्धन लोगों का खून चूसने वाले लुटेरे हैं। इसलिए वे एक ओर अंग्रेजों को ललकारते हैं तो दूसरी ओर देशवासियों को इन्क्लाब के लिए उकसाते भी हैं। क्रांतिकारियों के बारे में सबसे अधिक साहित्य की रचना करने वाले श्री कृष्ण सरल ने अपने महाकाव्य 'अजेय सेनानी चंद्रशेखर आजाद' में जुल्मी शासकों को चुनौती देते हुए लिखा है -

"राज सत्ता में हुए मदहोश दीवानो! लुटेरों,
मैं तुम्हारे जुल्म के आघात को ललकारता हूँ।
मैं तुम्हारे दंभ को-पाखंड को, देता चुनौती,
मैं तुम्हारी जात को-औकात को ललकारता हूँ।
.....
आग भूखे पेट की, अधिकार देती है सभी को,
चूसते जो खून, उनकी बोटियाँ हम नोच खाएँ।
जिन भुजाओं में कसक-कुछ कर दिखाने की ठसक है,
वे न भूखे पेट, दिल की आग ही अपनी दिखाएँ।"19
(https://www.shrikrishnasaral.com)

अंग्रेजों ने हमेशा ही 'फूट डालो और राज करो' की नीति पर चलते हुए भारत पर शासन किया था। स्वाधीनता की चिनगारी को दबाने के लिए वे यातना, प्रताड़ना और अत्याचार का सहारा ले रहे थे। साथ ही, समाज को बांटने के लिए तमाम साजिशें की जा रही थीं। अंग्रेज चाहते थे कि विभिन्न समुदायों एवं सामाजिक वर्गों के बीच मतभेद बढ़े जबकि

देशभक्त सेनानी चाहते थे कि एकजुटता बनी रहे। आजादी के लिए लड़ी जा रही लड़ाई की सफलता के लिए सबका यह प्रयास था कि भारत में अंग्रेजी शोषण के शिकार सभी वंचित, निर्धन, युवा, वृद्ध सहित नरम और गरम विचारधारा के लोग एक साथ मिलकर स्वाधीनता के संघर्ष में अपना योगदान दें –

"जवानों उठो हिन्द संतान। चाहती है माता बलिदान॥
सोने वालों उठो कड़क कर, जागे हुये बढ़ो वेदी पर।
बूढ़ा हो नारी हो या नर, सबको है आह्वान॥
उठो मजूरों दीन भिखारी, उठो उठो निद्रत व्यौपारी।
ओ? छात्रो! भावी अधिकारी, दुखी दरिद्र किसान॥
हो चमार भंगी या पासी - विप्र पुजारी या सन्यासी।
धनी दरिद्री या उपवासी-सबका भाग समान॥
हो गुलाम कैसा ही दाग़ी- वर्तमान शासन अनुरागी।
नरम गरम वैरागी त्यागी उठो सभी मति मान॥
फांसी चढ़ो जल में जावो- भय बल कभी न देश भुलावो।
हथकड़ियों पर मिलकर गावो- स्वतंत्रता का गान॥"20 (आज़ादी या मौत, संपा. रामस्वरूप गुप्ता, 1931)

उपसंहार

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अंग्रेजों के अत्याचार और आर्थिक शोषण के कारण भारत का निरंतर पतन हुआ और लोगों की दशा दीन-हीन होती चली गई। इस कालखंड ने भारत की अर्थव्यवस्था को गहरी चोट पहुंचाई और देश के विकास को कई दशकों तक पीछे धकेल दिया। अंग्रेजों की लूट के कारण भारतीयों के कष्ट बढ़ते जा रहे थे और गरीबों की सुध लेने वाला कोई नहीं था। अंग्रेजी राज में देश की बदहाली को देखकर हिंदी पत्रकारों एवं साहित्यकारों ने भारतीयों में स्वाभिमान का भाव जागृत करने वाले साहित्य का सृजन किया। सरकार की निरंकुश आर्थिक नीति ने समाज में धीरे-धीरे आत्मबलिदान की भावना के साथ साथ 'स्वदेशी' तथा 'स्वराज' के प्रति जन-समर्थन को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। देश की वतर्मान दुर्दशा और अतीत के गौरव गान की भावभूमि पर कवियों ने अंग्रेजी सत्ता से मुक्ति की कविताएं लिखीं ताकि स्वाधीनता की संघर्ष यात्रा को अंतिम पड़ाव तक पहुंचाया जा सके। निस्संदेह, ब्रिटिश राज में जिस प्रकार भारत का आर्थिक शोषण किया गया, उसके कारण जन जन में राष्ट्रवादी विचारों का अभ्युदय हुआ। इसमें कोई संदेह नहीं कि अंग्रेजी शोषण के शिकार लोगों के कष्टों और संघर्ष को समझना हम सबके लिए जरुरी है ताकि आत्मनिर्भर भारत के वर्तमान संकल्प के प्रति जन-मन को समर्पित किया जा सके।

सन्दर्भ –

हिंदी नवजागरण : भारतेन्दु और उनके बाद, शंभुनाथ, वाणी प्रकाशन, पृष्ठ 17
भारतेन्दुकालीन व्यंग्य परम्परा, संपा. ब्रजेंद्रनाथ पांडेय, प्रकाशक - कल्याणदास एंड ब्रदर्स, 1956, पृष्ठ 44
'राष्ट्रवाद और संस्कृति : राष्ट्रवादी साहित्य', ई-ज्ञानकोष, https://egyankosh.ac.in/
https://hi.wikipedia.org/wiki/भारतेन्दु_हरिशचन्द्र
भारतेंदु संचयन, रामजी यादव, पृष्ठ 238
वही, पृष्ठ 237

प्रेमघन रचनावली, भाग-2, संपा. राजीव रंजन उपाध्याय, प्रथम संस्करण-2014, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, पृ. 251
'स्वतंत्र स्वर', राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय, पृष्ठ 14, https://amritmahotsav.nic.in
समाचार पत्र 'प्रजासेवक', जयनारायण व्यास, दिनांक 20 अगस्त 1941 ई० से संकलित, पृष्ठ 9
'स्वतंत्र स्वर', राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय, पृष्ठ 8, https://amritmahotsav.nic.in
समाचार पत्र 'प्रजासेवक', मित्तल, दिनांक 28 मई 1941 से संकलित, पृष्ठ 10
'स्वतंत्र स्वर', राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय, पृष्ठ 19, https://amritmahotsav.nic.in
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में पत्र-पत्राकारों का योगदान, अमित तिवारी, भाषा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, पृष्ठ 85
स्वतंत्रता पुकारती, संपादक : नंद किशोर नवल, साहित्य अकादमी प्रकाशन, संस्करण 2006, पृष्ठ 180
मैथिलीशरण गुप्त ग्रंथावली, डी.के. पालीवाल, वाणी प्रकाशन, न दिल्ली, 2008, पृ.169
https://hi.wikibooks.org/wiki/राष्ट्रकवि_मैथिलीशरण_गुप्त
निराला और दिनकर की काव्य चेतना, डॉ. रजनी शिखरे, पृ.99
हिंदी साहित्य विविध प्रसंग, मत्स्येंद्र शुक्ल, पृ. 115
राष्ट्रकवि श्रीकृष्ण सरल साहित्य समिति की वेबसाइट, https://www.shrikrishnasaral.com/
आज़ादी या मौत, संपा. रामस्वरूप गुप्ता, प्रकाशन- एचपी प्रिंटिंग वर्क्स,